5

असाज़्प्रदायिक मसीहियतः यह है ज़्या?

इस अध्ययन का उद्देश्य हर पाठक के मन में पतरस, याकूब, यूहन्ना और पौलुस की तरह केवल मसीही बनने की पवित्र इच्छा को जगाना है। यरूशलेम की कलीसिया में ऐसे ही मसीही थे। एक मसीही का लक्ष्य इससे बढ़कर नहीं होता और न ही कोई दूसरा लक्ष्य परमेश्वर को भाता है। मैं समझता हूं कि बहुत से लोग परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं अर्थात वे सबसे बढ़कर उसे प्रसन्न करना चाहते हैं। वास्तव में, मुझे यह विश्वास करना अच्छा लगता है कि अपने पूरे मन से वे हर काम में प्रभु की बात मानना चाहते हैं। इसलिए, यदि वे साज़्प्रदायिक मसीही हैं तो यह केवल इसलिए है ज़्योंकि उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं है कि साज़्प्रदायिकवाद परमेश्वर को पसन्द नहीं है। यह अध्ययन ऐसे मन वाले लोगों के लिए ही है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि समस्त धार्मिक जगत इस बात से सहमत है कि प्रारज़्भिक मसीही किसी प्रकार की साज़्प्रदायिक कलीसिया के सदस्य नहीं थे। वे कलीसिया के सदस्य इसलिए थे ज़्योंकि प्रभु ने उन्हें इसमें मिलाया था। ये मसीही लोग प्रेरितों 2 अध्याय जैसी असाज़्प्रदायिक प्रार्थना सभाएं करते थे। वे परमेश्वर की महिमा गाने व प्रार्थना के लिए इकट्ठे होते थे, अविश्वासी लोगों को इन सभाओं में लाते थे, सुसमाचार का प्रचार करते थे, पापियों को बचाते थे, सेवकों की नियुज़्ति करते थे, निर्धनों की देखभाल करते थे, वास्तव में वे बिना किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया से जुड़े कलीसिया के हर प्रकार के काम करते थे। वे केवल मसीहियों और प्रभु द्वारा बनाई गई उद्धार पाए हुए लोगों की उस देह के [मण्डली] सदस्यों के रूप में रहते थे जिसमें उद्धार पाने वालों को प्रभु द्वारा प्रतिदिन मिलाया जाता था। पवित्र आत्मा उद्धार पाए हुओं के इस समूह को ''यरूशलेम की कलीसिया'' (प्रेरितों 8:1; 11:22) कहता था।

पिछले पाठ में हमने परमेश्वर की किताब की समीक्षा करते हुए देखा था कि यीशु ने अपने चेलों को सारी सच्चाई में अगुआई देने के लिए पवित्र आत्मा भेजने की प्रतिज्ञा की थी। उसने उन्हें आज्ञा दी थी कि जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पा लें तब तक यरूशलेम में ही ठहरे रहें। विश्वास की आंख से, हमने उन्हें यरूशलेम जाकर उस सामर्थ को पाने की प्रतीक्षा करते देखा। इसी प्रकार, हमने पवित्र आत्मा को आते, उनमें प्रवेश करते और अपना काम करते देखा। एक असाज़्प्रदायिक शिक्षक के रूप में, असाज़्प्रदायिक प्रचारक अर्थात पतरस के द्वारा, परमेश्वर के

इस आत्मा ने असाज़्प्रदायिक मसीहियत की शिक्षा दी, असाज़्प्रदायिक मसीही बनाए और एक असाज़्प्रदायिक कलीसिया अर्थात ''यरूशलेम की कलीसिया'' बनाई।

पिछले पाठ के अन्त में दिए गए विचारों को भी याद रखें। ऐसी ही प्रार्थना सभा करने वाला, जब उन्हीं सच्चाइयों का प्रचार करता है जिनका प्रचार इस सभा में हुआ था, और उद्धार पाने के लिए लोगों को वही बातें बताता है जो यरूशलेम की इस सभा में कही गई थीं, तो वह असाज़्प्रदायिक सभाएं कर रहा होता है और असाज़्प्रदायिक मसीहियत की शिक्षा दे रहा होता है। इसके अलावा ऐसी शिक्षा पाने वाले लोग किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया के सदस्य नहीं बनते हैं। असाज़्प्रदायिक मसीही हम किसी और तरह से नहीं बल्कि केवल विश्वास से पवित्र आत्मा के इस काम के द्वारा ही बन सकते हैं। असाज़्प्रदायिक मसीही बनने के लिए आवश्यक है कि जो कोई विश्वास से यरूशलेम के इन मसीहियों के साथ पवित्र आत्मा की बात मानता है वह केवल मसीही होता है इसके सिवाय कुछ और नहीं।

यरूशलेम में एक तूफ़ान जैसे शोर से पवित्र आत्मा के आने पर, बहुत बड़ी भीड़ अर्थात मसीह में विश्वास न करने वालों की एक मण्डली अर्थात वही भीड़ एकत्र हो गई थी जिसने पचास दिन पहले उसे क्रूस पर चढ़ाया था। पापियों की इस मण्डली में महिमा के प्रभु को क्रूस पर चढ़ाने वालों के साथ सबसे पहला काम यह दिखाना था कि उन्होंने सचमुच परमेश्वर के पुत्र की हत्या की थी। इस कारण पवित्र शिक्षक पतरस में होकर यीशु के प्रभु और मसीह होने की पुष्टि करते हुए जिसे परमेश्वर के दाहिने हाथ ऊंचा किया गया था, उसका प्रचार करने लगा। प्रामाणिक तथ्यों से पतरस ने यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में सिद्ध करके विश्वास न करने वालों से कहा, कि वे ''निश्चय जान लें कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी'' (प्रेरितों 2:36)। पवित्र आत्मा की अगुआई में पतरस की इस पज़्की गवाही से उन्हें मानना पड़ा। निराशा भरे संताप में, वे मन और आत्मा की राहत की पुकार करने लगे।

पुन: काम पर विचार करने के लिए हम रुकते हैं। वास्तव में वहां ज़्या किया गया था और इसे कैसे पूरा किया गया था? निश्चय ही हमने अभी तक इस सभा में सामर्थपूर्ण प्रचार के सिवाय कुछ होते नहीं देखा। प्रचारक ने प्रत्येक मन में यह महान सच्चाई बैठाने के लिए कठिन परिश्रम किया है कि यीशु वही था जो होने का उसने दावा किया है; उन्होंने दुष्ट हाथों से उसकी हत्या कर दी थी; और परमेश्वर ने उसे मुर्दों में से जिलाकर अपने दाहिने हाथ प्रभु और मसीह बनाकर महिमा दी थी। बड़े और मानने योग्य तर्क से उसने उन हज़ारों मनों पर इस सच्चाई की बौछार कर दी जिससे वे निराश होकर फूट पड़े। उन पर यह सब असर यीशु के प्रचार से हुआ था। वहां किसी और तरह का कोई प्रयास नहीं किया गया था।

इस संदेश को सुनने के लिए एकत्र होने के समय उनका विश्वास था कि यीशु की देह भूमि में सो रही है और उसके सभी दावे झूठे पड़ चुके हैं तथा पचास दिन पहले उसे क्रूस पर चढ़ाकर उन्होंने सही किया है। उनका मानना था कि ऐसा करके उन्होंने परमेश्वर की सेवा की है। ये भले मन वाले लोग कितने बदल गए थे! कितने परेशान थे वे! पतरस की बात सुनकर, उन्होंने इसके बिल्कुल विपरीत विश्वास किया कि यीशु के सभी दावे झूठे थे, कि

उन्होंने वास्तव में परमेश्वर के मसीह की हत्या की है और यह कि वह फिर से जी उठा है, परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा प्रभु और मसीह है। उनका यही विश्वास होगा, और इस दोष के कारण ही वे इतने निराश हुए थे।

इस विश्वास, दोष और अपने सुनने वालों के बीच मन की उदासी को जानते हुए प्रचारक ने उनके निराश मनों की सहायता की। उन्हें राहत देने के लिए उसने कहा, ''मन फिराओ।'' इसलिए इन मनों में परिवर्तन आया जिससे वे पुकार उठे थे अर्थात उनकी उदासी और शोक मन फिराव से अलग था। फिर, उनमें आया परिवर्तन मन फिराव से पहले उद्धार रहित मनों में आने वाला परिवर्तन ही है। यह तथ्य उतना ही पज़्का है जितना यह कि पवित्र आत्मा ने उनकी उदासी की पुकार का उज़र दिया। उन्हें इस उदासी तथा शोक से निकालने के लिए, उन्हें मन फिराने के लिए कहा गया था। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह शिक्षा असाज़्प्रदायिक थी और आज यही शिक्षा देकर हम कोई नई साज़्प्रदायिक कलीसिया नहीं बना रहे!

वहां ऐसा ज़्या ज़्या हुआ था जिससे शोक और उदासी छा गई? निश्चय ही इन लोगों के मनों में बहुत बड़ा परिवर्तन आया था। इस परिवर्तन के कारण उदासी और शोक तो हुआ परन्तु अभी किसी ने मन नहीं फिराया था। निश्चय ही, इसका अर्थ यीशु को प्रभु और मसीह मानना था। फिर तो, इतना विश्वास, मन फिराव से पूर्व होना और मसीह में प्रत्येक परिवर्तित के मन फिराव के बाद होना चाहिए। मेरी शिक्षा में असाज़्प्रदायिक होने का अर्थ है कि मैं यही सिखाऊं कि यह परिवर्तन मन फिराव से पहले आता है।

वास्तव में, पवित्र आत्मा ने पौलुस में यही क्रम सिखाया है। ''अब मैं आनन्दित हूं पर इसलिए नहीं कि तुम को शोक पहुंचा बरन इसलिए कि तुम ने उस शोक के कारण मन फिराया, ज़्योंकि तुज़्हारा शोक परमेश्वर की इच्छा के अनुसार था, कि हमारी ओर से तुज़्हें किसी बात में हानि न पहुंचे। ज़्योंकि परमेश्वर-भज़्ति का शोक ऐसा पश्चाज़ाप उत्पन्न करता है जिस का परिणाम उद्धार है'' (2 कुरिन्थियों 7:9, 10क)।

निस्संदेह इस भीड़ के सदस्य जिनकी बात कर रहे हैं, शोकित थे। उनका यह शोक वास्तव में परमेश्वर भज़्ति का शोक था। पतरस ने उन्हें कहा, ''मन फिराओ'' जो कि स्वर्ग की ओर से आदेश था।

मैं प्रत्येक पाठक के पास बैठकर इन विषयों पर उसके साथ ''मन से मन की'' बात करने के लिए बैठना चाहूंगा। संसार के उद्धार के लिए यह आवश्यक है कि प्रभु के पवित्र लोग वैसे ही बनें जैसे ये प्रारज़्भिक मसीही थे अर्थात ''एक चिज़ और एक मन'' (प्रेरितों 4:32)। हम में कोई फूट न हो, हम उसी मन तथा विचार में पूरी तरह से एक हों, ''इसलिए कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा'' (यूहन्ना 17:21ग)।

मैं मसीह के लोगों को इस असाज़्प्रदायिक सुसमाचार सभा के विषय में स्पष्ट करने का यत्न कर रहा हूं। सचमुच पवित्र आत्मा ने इस सभा के बारे में इतना स्पष्ट बताया है कि मुझे नहीं लगता कि कोई भले मन वाला व्यज़्ति इससे असहमत हो। यदि हम इन आरज़्भिक चेलों जैसे बनना और वैसा ही करना चाहते हैं जैसा वे करते थे, तो मुझे नहीं लगता कि हम परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे इन तथ्यों से सहमत न हों।

निश्चय ही, यदि हम में से कोई अपनी शिक्षा या किसी अन्य मनुष्य की शिक्षा लेकर आए, और हम इस शिक्षा से पवित्र लोगों की एकता और अपने प्रभु की सच्चाई से अधिक प्रेम करते हैं, तो निश्चित रूप से हमें परमेश्वर की पुस्तक में अपनी शिक्षा का समर्थन पाने के लिए कुछ न कुछ अवश्य मिल जाएगा। यदि कोई व्यज़्ति किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया से जुड़ा हुआ है और उसने इससे जुड़े रहने की ठान रखी है तो असाज़्प्रदायिक कलीसिया की सरल शिक्षा से उसे बदला नहीं जा सकता। मैं ईमानदारी के साथ मन से सच्चाई के सभी खोज करने वालों से बिनती करता हूं कि वे पवित्र आत्मा के निर्देश में हुई इस प्रार्थना के स्पष्ट तथ्यों को अपने मनों में बसने दें। परमेश्वर के वचन के बुद्धिमान व्यज़्ति द्वारा नीचे दिए गए विचार पर ध्यान करें:

> इनको अपनी आंखों की ओट न होने दे; वरन अपने मन में धारण कर। ज़्योंकि जिनको वे प्राप्त होती हैं, वे उनके जीवित रहने का, और उनके सारे शरीर के चंगे रहने का कारण होती हैं। सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; ज़्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।... तेरी आंखें साज़्हने ही की ओर लगी रहें, और तेरी पलकें आगे की ओर खुली रहें। अपने पांव धरने के लिए मार्ग को समतल कर, और तेरे सब मार्ग ठीक रहें। न तो दहिनी ओर मुड़ना, और न बाईं ओर; अपने पांव को बुराई के मार्ग पर चलने से हटा ले (नीतिवचन 4:21-27)।

पुन: आइए यरूशलेम की इस प्रार्थना सभा की अपनी समीक्षा में आगे बढ़ते हैं। इन दुखी और शोकित मनों से कहा गया था, कि ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से (में) बपतिस्मा ले ...'' (प्रेरितों 2:38)। याद रखें कि यह उज़र उन निराश मन वालों को परमेश्वर के पुत्र की हत्या करने के गज़्भीर अपराध के बोझ से राहत देने के लिए दिया गया था। यही पाप उनके मनों पर बोझ बना हुआ था। वे अपने किए के कारण बहुत शोकित थे और इसका मोल भरने के लिए हर तरह से तैयार थे परन्तु ज़्या इसकी भरपाई हो सकती थी? ''हम ज़्या करें?'' उनके मन की तड़प थी (प्रेरितों 2:37ख)। निश्चय ही वे हैरान थे कि इतने भयानक पाप से छुटकारा पाने के लिए कुछ हो भी सकता है या नहीं। इसका उज़र था कि ''मन फिराओ।'' वास्तव में पतरस कह रहा था, ''अपने आपको मसीह अर्थात प्रभु के आगे समर्पित कर दो। उसकी इच्छा को अपनी इच्छा बना लो। बिना किसी पूर्वधारणा के उसकी ओर मुड़ जाओ।'' उसने लोगों को बताया, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)।

हम सब मन से इस बात से सहमत हैं कि यह उज़र देते हुए पवित्र आत्मा इन लोगों के लिए क्षमा की या दोष से छूटने की शर्तें भी शामिल कर रहा था। इस उज़र की शर्तों को मानकर कहीं न कहीं उन्हें राहत, दोष से छुटकारा और क्षमा मिलनी थी। हम निश्चय के साथ कह सकते हैं कि उनका यह छुटकारा मन फिराने से पहले नहीं हुआ था। जब उन्होंने अपने आपको पूरी तरह से मसीह को समर्पित करके मन फिराया, तो उन्हें अपने पापों की

क्षमा पाने के लिए बपतिस्मा लेने के लिए कहा गया। सज़्पूर्ण पवित्र शास्त्र में केवल एक बार यहीं पर पाप की क्षमा या छुटकारे का उल्लेख मिलता है (बेशक पूछने वालों के मन पर सबसे बड़ा बोझ यही था)। इन निराश लोगों को यहीं पर अपने पापों की ''क्षमा के लिए'' बपतिस्मा लेने के लिए कहा गया था। ज़्या यह सज़्भव है कि इन लोगों तक पहले ही पहुंचा जा चुका था या वही बात बताई जा चुकी थी कि उन्हें किस का (में) बपतिस्मा लेने के लिए कहा गया था? यकीनन नहीं। इसके इलावा इन लोगों को बपतिस्मे के बाद पवित्र आत्मा का दान देने की प्रतिज्ञा भी की गई थी।

लिखा है, ''सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए'' (प्रेरितों 2:41)। उन दिनों परमेश्वर उनको ''उन में [जो उद्धार पाते थे] मिला देता था'' (प्रेरितों 2:47)। हमने देखा कि ये लोग परमेश्वर की कलीसिया बन गए थे और इसके सदस्य थे ज़्योंकि इससे पहले वे कलीसिया में मिलाए नहीं गए थे। बपतिस्मा लेने के बाद इन तीन हज़ार लोगों को उनमें मिला लिया गया था और वे परमेश्वर की कलीसिया के सदस्य बन गए थे।

पवित्र शास्त्र स्पष्ट बताता है कि इस असाज़्प्रदायिक कलीसिया की प्रार्थना सभा में लोगों को विश्वास करने (''पज़्के तौर पर जानने''), मन फिराने, और पापों की क्षमा के निमिज़ बपतिस्मा लेने के लिए कहा गया था। पवित्र शास्त्र के अनुसार यह भी सुनिश्चित है कि लोगों को बपतिस्मा लेने के बाद चेलों की उद्धार पाई हुई मण्डली में मिलाया गया था और उन्हें बपतिस्मा लेने के समय पवित्र आत्मा का दान दिया गया था। ये महत्वपूर्ण तथ्य हैं जिसका एक ईमानदार मन वाले व्यज़्ति के लिए बहुत महत्व है।

अंग्रेज़ी के शज़्द ''unto the remission of ... sins'' में ''unto'' के अर्थ पर हम फिर कभी विचार करेंगे। परन्तु इतना तो हम पहले ही परिभाषित कर चुके हैं कि जो कोई लोगों को उसी शिक्षा पर विश्वास करना सिखाता है जो इस असाज़्प्रदायिक कलीसिया की प्रार्थना सभा में सिखाया गया था, वह व्यज़्ति देख सकता है कि उसकी शिक्षा बाइबल में से ही ली गई है; वह सुनिश्चित हो सकता है कि वह किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया को नहीं बल्कि केवल परमेश्वर की कलीसिया को ही बना रहा है। तो फिर, वह ज़्या शिक्षा देता है? वह लोगों को यह विश्वास करना सिखाता है कि यीशु प्रभु भी है और मसीह भी और वह उन्हें यह ईश्वरीय शोक के निमिज़ विश्वास करने के लिए कहता है। वह विश्वास करने वालों को बुलाता है और शोकित होने वालों को मन फिराने के लिए कहता है; और उन विश्वास करने वालों को, शोक करने वालों को और मन फिराने वालों को अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने के लिए कहता है। वह उन्हें परमेश्वर की प्रतिज्ञा देता है कि आज्ञा मानने पर उन्हें पवित्र आत्मा का दान देकर उद्धार पाए हुओं अर्थात मसीह की कलीसिया में मिला लिया जाएगा। ऐसा उपदेशक पतरस जैसा ही मसीही और प्रचारक है और जो लोग उसका संदेश सुनकर मसीह को अपना प्रभु मानते हैं, वे उन तीन हज़ार मसीहियों की तरह ही हैं। वे केवल उसी कलीसिया के सदस्य हैं जिसमें परमेश्वर ने उन लोगों को मिलाया था।